5.

परिस्थिति	प्रभाव	प्रभावित
गरमी से	बेहाल	राजा
उपहास से	शर्मिंदा	कालिदास
क्रोध से	घबराया	सेवक
व्यंग्य से	हक्के-बक्के	राजा
गर्म पानी से	क्रोधित	राजा

6. क. सोने की सुराही में रखे होने के कारण पानी ठंडा नहीं था।

ख. सोने की सुराही में पानी भरने का सुझाव कालिदास ने दिया। यह सिद्ध करने के लिए कि पानी की शीतलता बरतन की सुंदरता पर निर्भर नहीं करती।

ग. राजा सुंदरता के पुजारी थे। इसलिए उन्हें मिट्टी की सुराही से पानी पीना शोभा नहीं देता।

घ. आप सुंदरता के पुजारी हैं। इस बदसूरत सुराही से पानी पीना आपको शोभा नहीं देता। इसलिए इसकी जगह मैंने सोने की सुराही में पानी भरवाया। क्या आपको इस सुंदर सुराही से पानी पीना अच्छा नहीं लगा?

ङ.

शब्द	मूल शब्द	उपसर्ग/प्रत्यय	नया शब्द
महाराज	**राज**	**उपसर्ग -महा**	**महाभोग**
ठंडा	ठंड	आ	मंदा
भरने	भर	ने	करने
कविराज	कवि	राज	महाराज
सुंदरता	सुंदर	ता	मधुरता
बदसूरत	सूरत	बद	बदबू
भरवाया	भर	वाया	बनवाया
महाकवि	कवि	महा	महाकाल

च. हक्का बक्का रह जाना (हैरान रह जाना)

दाँतों तले अँगुली दबाना - सरकस में हाथी के करतब देखकर हम सबने दाँतों तले अँगुली दबा ली।

Scanned by CamScanner

7. क. पसीने
   ख. दृष्टि
   ग. विद्वान
   घ. सुनार
   ङ. उबला
   च. मिट्टी
   छ. बदसूरत
8. क. गलत
   ख. गलत
   ग. सही
   घ. गलत
   ङ. गलत
   च. सही
   छ. सही
9. क. विद्वान – कालिदास ने राजा द्वारा उसके रूप का उपहास उड़ाने पर उसने उसी समय उत्तर न देकर, सोने की सुराही के माध्यम से सिद्ध कर दिया कि सभी सुंदर वस्तुएँ गुणवान नहीं होती।
   ख. गुणी – कालिदास बहुत ही गुणी कवि थे। उनकी गणना भारत के ही नहीं, विश्व के रचनाकारों में होती है।
   ग. महान कवि – राजा विक्रमादित्य भी कालिदास को महान कवि मानते हैं, इसलिए उन्होंने उसे दरबार के नौ रत्नों में स्थान दिया था।
   घ. सकारात्मकता– कालिदास के अनुसार जिस प्रकार पानी की शीतलता बरतन की सुंदरता पर निर्भर नहीं करती, उसी प्रकार बुद्धि की सुंदरता शरीर पर निर्भर नहीं करती।
   ङ. उपहास प्रिय – कालिदास की उपहास प्रियता का पता तब चलता है, जब राजा सेवक से पूछता है कि सोने की सुराही में पानी भरने का सुझाव किस मूर्ख ने दिया, तो कालिदास कहते हैं कि वह मूर्ख मैं हूँ।
   विद्यार्थियों के उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।
10. महाकवि ने राजा को इस भूल का अहसास करवाया कि सभी सुंदर वस्तुएँ गुणवान नहीं होती। उसने मिट्टी की सुराही की जगह सोने की सुराही में पानी भर दिया।
11. यदि मैं कवि कालिदास की जगह होता, तो मैं राजा विक्रमादित्य को बताता कि सुंदरता और करूपता तो भगवान की देन है। इसलिए सुंदरता का अभिमान नहीं करना चाहिए। यह जरूरी नहीं कि हर सुंदर चीज़ में गुण हों और हर करूप चीज़ में अवगुण हों।
    विद्यार्थियों के उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।
12. इस कहानी का अन्य शीर्षक 'कालिदास की सूझबूझ' हो सकता है। इस कहानी में कालिदास ने अपनी सूझबूझ से राजा विक्रमादित्य के उपहास का उत्तर दिया। राजा के व्यंग्य का उत्तर भी कालिदास ने व्यंग्य से दिया।
    विद्यार्थियों के उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।
13. एक बार मैं परीक्षा दे रहा था। मेरे आगे बैठा मेरा एक मित्र बार-बार मुड़कर मुझे उत्तर पत्रिका दिखाने के लिए कह रहा था। मैंने उसे बहुत बार कहा कि वह सोचकर उत्तर लिखे, परंतु वह बार-बार मुझे परेशान कर रहा था। अध्यापिका ने मुझे उससे बात करते हुए देख लिया। उन्होंने मेरी उत्तर पत्रिका ले ली। मैंने उन्हें बहुत समझाया कि मैं उससे बात नहीं कर रहा था। वह मुझे

Scanned by CamScanner

पाठ-2 सोने की सुराही

परेशान कर रहा था। उन्हें मेरी बात पर यकीन नहीं हुआ। अंत में मैंने उन्हें कहा कि आप मेरी उत्तर-पत्रिका और उस विद्यार्थी की उत्तर पत्रिका मिलाकर देख लें। उन्होंने ऐसा ही किया। मेरे उत्तर उस विद्यार्थी के उत्तरों से बिलकुल अलग थे। मेरी अध्यापिका ने मेरी उत्तर-पत्रिका वापस कर दी।

विद्यार्थियों के उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।

14. मिट्टी की सुराही तथा सोने की सुराही में से मिट्टी की सुराही उपयोगी होती है, उसी प्रकार कोयला रूपहीन होते हुए भी बहुत काम का होता है, जो आग जलाकर खाना बनाने, सरदी में हाथ सेंकने और रेलगाड़ी चलाने के काम आता है। जहाँ तक कोयले की खान से निकलने वाला हीरा केवल गहने बनाने के ही काम आता है। कोयले की कीमत भी कम होती है और गरीब लोग भी इसका उपयोग कर सकते हैं। जबकि हीरा बहुत कीमती होता है, जिसका उपयोग केवल अमीर लोग ही कर सकते हैं।

विद्यार्थियों के उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।

15. इस लोककथा से हमें यह शिक्षा मिलती है कि प्रत्येक सुंदर वस्तु गुणवान नहीं होती। मिट्टी की सुराही में पानी ठंडा हो सकता है, परंतु सोने की सुंदर सुराही पानी को ठंडा नहीं कर सकती।

16. **सेवक :** महाराज, पानी आज इस सुराही में रखा था।

राजा : यह तो सोने की सुराही है... इसमें पानी कैसे ठंडा होगा? मिट्टी की सुराही किधर गई? इस सोने की सुराही में पानी भरने का सुझाव किस मूर्ख ने दिया?

कालिदास : वह मूर्ख मैं हूँ महाराज!

महाराज हक्के-बक्के देखते ही रह गए।

राजा : कविराज आप?

कालिदास : जी हाँ महाराज! मैंने सोचा आप सुंदरता के पुजारी हैं। इस बदसूरत सुराही से पानी पीना आपको शोभा नहीं देता। इसलिए इसकी जगह मैंने सोने की सुराही में पानी भरवाया। क्या आपको इस सुंदर सुराही से पानी पीना अच्छा नहीं लगा?

राजा महाकवि का व्यंग्य समझ गए।

मुझे यह अंश सबसे हास्यप्रद लगा क्योंकि इसमें कालिदास ने बहुत चतुराई से राजा विक्रमादित्य के व्यंग्य का उत्तर दिया।

विद्यार्थियों के उत्तर अलग-अलग हो सकते हैं।

Scanned by CamScanner